विचित्रताओं का सागर, मृत सागर

दुनियां में उपलब्ध सागरों में एक सागर ऐसा भी है जो बहुमूल्य होते हुए भी 'डेड-सी' यानी 'मृत सागर' के नाम से जाना जाता है। मृत इसलिए कि जीवितों जैसा इसका स्वभाव नहीं। जीवंत जलाशयों में अनेक प्रकार के जीव-जंतु, वनस्पतियां एवं शैवाल होते हैं। जो भी जलचर अथवा वनस्पतियां दूसरी नदियों से बहकर इसमें आते हैं, वे क्षणभर भी जीवित नहीं रह पाते और तत्काल मौत के शिकार हो जाते हैं। इसका क्या कारण है?

खनिज लवणों की अधिकताः- वैज्ञानिकों के अनुसार, इसके जल में जिस अनुपात में खनिज लवणों की अधिकता है, वही इसका प्रमुख कारण है। जहां अन्य सागरों में इन लवणों की मात्रा केवल 3.5 प्रतिशत है, वहीं मृत सागर में इनका परिणाम 25 प्रतिशत से भी अधिक है। इन लवणों में सोडियम, कैल्शियम, पोटेशियम, जिप्सम एवं अनेक प्रकार के ब्रोमाइड हैं।

एक अनुमान के अनुसार इस सागर में अब भी लगभग 4 करोड़ टन नमक घुला हुआ है। प्रचुर मात्रा में लवणों की विद्यमानता के कारण जल का घनत्व काफी बढ़ा-चढ़ा है। इसके जल का घनत्व 1.199 है, जो साधारण पानी की अपेक्षा 1.18 गुना अधिक है। इस असाधारण घनत्व के कारण कोई भी वस्तु इसमें डूबने की बजाय तैरने लगती है। यदि कोई व्यक्ति इसमें डूबकर आत्महत्या करना चाहे तो सागर उसे ऐसा करने से रोकता है।

लगातार बढ़ता जलस्तरः- लगभग 49 मील लंबा और 10 मील चौड़ा यह सागर इस्राइल और जॉर्डन की सीमा पर स्थित है। इसमें प्रतिदिन करीब 6 मिलियन गैलन पानी जोर्डन व अन्य नदियों से आकर गिरता है, इसलिए पिछले 96 वर्षों में इसका जल स्तर लगभग 20 फुट ऊंचा उठ गया है। इस असामान्य बढ़ोत्तरी के कारण इसके कई टापू जलमग्न हो चुके हैं।

समुद्रतल से यह लगभग 1300 फुट नीचे स्थित है। इसकी गहराई वैसे तो असमान है किंतु उत्तरी किनारे पर उसकी गहराई सर्वाधिक मापी गई है। यह करीब 1300 फुट है। गर्मियों में इसका तापमान 140 डिग्री फारेनहाइट एवं सर्दियों में 80 डिग्री फारेनहाइट हो जाता है।

मृत सागर बनाम जीवनदायी सागरः- वैसे कहने को तो यह मृत सागर है लेकिन इसके बावजूद भी मूल्यवान है। इस मृत सागर में इतने खनिज लवण हैं कि डेड-सी होने के बाद भी इसकी कीमत घटती नहीं है। इन सबके दोहन के लिए इसके तट पर अनेक प्रकार के कई संयंत्र एवं कारखाने लगाए गए हैं। जार्डन के कलिया नामक नगर में सागर जल से पोटेशियम क्लोराइड प्राप्त करने का एक कारखाना स्थित है।

इसके अतिरिक्त नमक, ब्रोमाइड, जिप्सम आदि लवणों को प्राप्त करने के भी कारखाने यत्र-तत्र तटवर्ती क्षेत्रों में लगे हुए हैं। यह सागर प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है। इनके ठहरने के लिए तटवर्ती क्षेत्र में अनेक बहुमंजिली इमारतें, होटल एवं रेस्तरां बने हुए हैं।

त्वचारोग नाशक है पानीः- डेड-सी के जल की एक बड़ी विशेषता यह बताई जाती है कि इससे कई तरह के त्वचा रोग ठीक हो जाते हैं। जनश्रुति है कि यूनान के राजा हेरो एक बार कई तरह के त्वचा रोग से ग्रस्त हो गए थे। अनेक राजवैद्य की सलाह पर उन्हें मृत सागर के जल से स्नान कराया गया। कहते हैं स्नान के कुछ दिन पश्चात् वे रोगमुक्त हो गए। इसके बावजूद वह मृत सागर कहलाता है, यह दुर्भाग्य की बात है।

रोबोट से युवाओं में नौकरी जाने का भय

ताजा अध्ययन के मुताबिक युवाओं में यह डर सताने लगा है कि रोबोट जैसे अत्याधुनिक उपकरण कहीं उनकी नौकरी न छीन लें। यह रिपोर्ट ऐसे समय आई है जब चीन में रोबोट द्वारा एंक रंग और रिपोर्ट तैयार करने की खबरें सामने आ चुकी हैं। इंफोसिस की ओर से कराए गए सर्वेक्षण में दस में से चार युवाओं का विश्वास है कि आने वाले दस वर्षों में मशीन अपना काम खुद करने लगेंगीं। पश्चिमी देशों में कराए गए अध्ययन में लगभग आधे युवा कामगारों ने माना कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली उन्हें नौकरी के लिए पर्याप्त तौर पर समर्थ नहीं बनाती है। यूरोपीय देशों में यह भावना सबसे ज्यादा प्रबल हैं। भारत समेत नौ देशों में कराए गए सर्वेक्षण में १६ से २५ वर्ष आयुवर्ग वाले नौ हजार लोगों को शामिल किया गया था। अस्सी फीसद प्रतिभागियों ने बताया कि रोबोट और अन्य अत्याधुनिक तकनीकों के विकास के चलते उन्हें खुद ही अपना कौशल विकास करना पड़ता है। स्कूल या कॉलेज में इस बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं दी जाती है।

जहां पुरुषों का निकाह लड़कों से ही होता है

यह संसार विचित्रताओं से भरा हुआ है। कई बातें यहां ऐसी होती हैं जो सच्चाई कल्पना से भी अधिक आश्चर्यजनक साबित होती हैं। कई ऐसी कुपरंपराएं भी होती हैं जिसका पालन लोग आंख बंद कर के आज के युग में भी करते देखे जा सकते हैं।

इंडोनेशिया के जावा द्वीप पर पोनोरोगो नामक एक छोटा-सा शहर है। यहां मुस्लिम आबादी की बहुलता है। इस्लाम धर्म में समलैंगिक संबंधों को स्वीकृति प्राप्त नहीं है, फिर भी यहां एक परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से ही चली आ रही है जिसमें लड़कों को पुरूषों की पत्नी की भूमिका निभाते हुए रहना पड़ता है।

वारोक अर्थात् धर्माचार्य या पुजारी को 'वोक कुचिन' के नाम से जाना जाता है। वोक कुचिन का आवास पोनोरोगों में किसी मंदिर सरीखा दिखाई देता है। इस आवास को देखकर यह आभास नहीं होता है कि यह किसी धर्माचार्य या पुजारी का आवास होगा।

पोनोरोगो में इन वारोकों को अत्यंत मान-सम्मान प्राप्त है। वहां की स्थानीय जनता इनकी कथित अलौकिक शक्तियों से भयाक्र ांत रहती है किन्तु समस्त वारोकों के मध्य वोक कुचिन को सर्वाधिक श्रद्धा और सम्मान प्राप्त है। इनके आवास पर प्रतिदिन उनके अनुयायियों का तांता लगा रहता है। ये अनुयायी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए व आध्यात्मिक संरक्षण पाने के लिए वोक कुचिन के पास आते रहते हैं।

वहां के युवा लड़कों को 'जेम ब्लेक' के नाम से जाना जाता है। जब युवा लड़के वीर्य धारण करने योग्य हो जाते हैं अर्थात् जो मैथुन क्रि या के उपरान्त वीर्यपात करने में सक्षम होते हैं, उस उम्र के लड़कों का प्रतीकात्मक विवाह पोनोरोगो के स्थानीय पुजारियों के साथ करना अनिवार्य होता है।

पुजारियों के साथ जेम ब्लेक के विवाह के अवधि सामान्यतः दो वर्षों की होती है। इस अवधि में इन किशोर लड़कों को पुजारियों की जीवन संगिनी की भूमिका का बखूबी निर्वाह करना पड़ता है। इन्हें नियमित रूप से पुजारियों के साथ ही पत्नी की भांति शयन करना पड़ता है। अवधि समाप्त हो जाने के बाद उन युवकों को वापस परिवार में भेज दिया जाता है। वहां से लौटकर आने वाले युवकों को ही युवतियों से शादी करने का अधिकार होता है।

किंवदंती है कि तकरीबन एक हजार वर्ष पूर्व एक इंडोनेशियाई सम्राट जिसका प्रासाद (महल) पोनोरोगो में ही अवस्थित था, ने किसी स्त्री से विवाह रचाने के लिए मना कर दिया था। सम्राट ने किसी स्त्री को अपनी रानी बनाने के बजाय एक लड़के से ही विवाह रचाया था। तभी से पोनोरोगो के पुजारीगण इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं।

पक्षियों की रंगीन दुनिया : सारे रंग हमारे पंखों में

पक्षी हमारे चारों और दिन हो या रात मौजूद रहते हैं। कई पक्षी ऐसे होते है जो हमें देखने में सुंदर लगते हैं। कुछ पक्षी तो रोज दिखाई देते है और कुछ विदेशी पक्षी जो मौसम के हिसाब से ही देखने को मिलते हैं। आज हम पक्षियों की दुनिया में एक नजर डाल रहे हैं। जिसमें कुछ रंगबिरंगे पक्षियों के बारे में जानेगें।

ब्लू कोटिंगा

हैलो दोस्तो, मैं हूं ब्लू कोटिंगा। हम जंगली पक्षी पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर बैठना पसंद करते हैं। फलों को खुरच-खुरचकर खाना हमें पसंद है। हम एक डाल से दूसरी पर फुदकते फिरते हैं। साथ ही खास किस्म की आवाबा निकालते हैं। हम कोलंबिया, उत्तर-पश्चिम एक्वाडोर, पूर्वी और मध्य पनामा के साथ पश्चिमी वेनेबुएला में पाए जाते हैं।

वाइट डव

ख़ूबसूरत झुरमुटनुमा सफेद पंख ही हमारी खासियत हैं। इन्हें देखकर बरबस ही लोग मुग्ध हो जाते हैं हम पर। हमें शांति का दूत तो कहा ही जाता है, पर कुछ स्थानों पर हमें शादी का पक्षी भी कहते हैं। खुश्क स्थानों पर रहना पसंद करते हैं हम और भोजन में अनाज के दाने बड़े चाव से खाते हैं। इसके अलावा फल, चाहे वो कैक्टस का ही क्यों न हो, खा लेते हैं। हम सब अमेरिका के दक्षिणपूर्वी हिस्से में बहुतायत में पाए जाते हैं।

मोर

अपने राष्ट्रीय पक्षी को आप कैसे भूल सकते हैं।

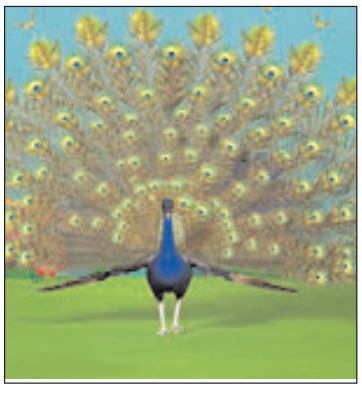

हम रंगीन पक्षी हंसी, खुशी और उल्लास के प्रतीक माने जाते हैं। भारत में बहुतायत पाए जाते हैं हम। वैसे तो बयादातर जंगलों में ही रहते हैं पर जंगलों से सटे कुछ गांवों में भी हमारे दर्शन हो जाते हैं। पौधे, बीज और कुछ छोटे-छोटे कीड़े मकोड़ों के साथ सांप जैसे खतरनाक जीव को भी अपना भोजन बना लेते हैं।

गोल्डन नी-हॉड

यानी कि हैलो, अरे भई! चीनी तीतर हूं न। मोर की तरह दिखता बारूर हूं, पर मोर नहीं हूं। हम पश्चिमी चीन के हिस्सों में मिलते हैं। पर आजकल चिड़िया घरों की शोभा बढ़ा रहे हैं। खाने में हम अनाज के दानों के

साथ बिना हड्डियों के छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े खा लेते हैं। वैसे पेड़ की जड़ भी हमारे भोजन का हिस्सा है। हम उड़ने के बजाए दौड़ना भाता है।

किंग फिशर

जैसा कि नाम से ही बाहिर है कि हमें मछलियां बहुत पसंद हैं। मछलियों में अलावा छोटे जीव भी हमें बहुत पसंद हैं। अपनी नुकीली चोंच की वजह से हम लकड़ियों में बड़ी तेजी से छेद भी कर देते हैं। वैसे हमारे भाई-बंधु दक्षिणी-पश्चिमी कनाडा के साथ मैक्सिको, टैक्सास और एरीबोना में बड़ी शान से रहते हैं।

पफिन

हम सॉफ्ट टॉयबा नहीं हैं। हम हैं पफिन, समुद्र में गोते लगाने वाले पक्षी। एक बार के गोते में ही हम बहुत बयादा मछली अपने चोंच में धर लाते हैं। फूला हुआ शरीर और छोटे पैरों के साथ छोटे-छोटे पंख होते हैं हमारे। पर हम बाबरदस्त तैराक होते हैं। कभी मौका मिले तो आबामाना। हम ठंडे प्रदेशों में रहना पसंद

करते हैं। समूह में रहना हमें पसंद है।

मैंडेरिन डक

मैं हूं चीनी बत्तख, जिसे सौभाग्य का सूचक माना जाता है। नए शादीशुदा जोड़े को उपहार स्वरूप दिया जाता है। मुझे देखकर आपको लगा होगा कि शायद किसी चित्रकार ने मुझे रंग दिया हो। पर ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। हमारे चटख रंगों और पंखों की ख़ूबसूरत बनावट ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। मुझे जलीय शाक, बीज और कीड़े-मकोड़ों के साथ बादाम और मोती पसंद है। हम छोटे समूहों में रहते हैं। हमें पानी में मंद गति से तैरना भाता है।

रेन बो लोरिकैट

सतरंगी तोते हैं हम। हम ऑस्ट्रेलिया, पूर्वी इंडोनेशिया, पापुआ न्यू गिनी, सॉलोमन आयलैंड में पाए जाते हैं। हमें सामाजिकता बड़ी भाती है। हम साथ मिलकर शोर मचाते हैं। खैर, हम किसी भी प्रकार के जंगल में निवास कर सकते हैं। चाहे वो वर्षा वन हों या फिर सामान्य वन। अपने भोजन के लिए पूरी तरह से पेड़ों पर ही आश्रित होते हैं। उसकी जड़ से लकर कोमल पत्तियां और फल भी खा लेते हैं हम।

लिलास ब्रेस्टेड रोलर

हम छोटे आकार की चिड़िया, चटख रंगों में

बहुत आकर्षक लगती हैं न। हमें टिड्डे, भौंरा, कभी-कभी छिपकली, केकड़े जैसे जीवों को अपना भोजन बनाना पसंद है। खुले घास के मैदानों और ऊंचे पेड़ों पर रहते हैं हम।